नव मार्क्सवाद – परिचय और प्रमुख सिद्धान्त

डॉ. प्रशान्त पंवार
वरिष्ठ व्याख्याता राजनीति विज्ञान
राजकीय दरबार आचार्य संस्कृत
महाविद्यालय, जोधपुर (राज.)

नव मार्क्सवाद(Neo-Marxism)–

जर्मनी में दो महायुद्धों के बीच के काल में गोथे विश्वविद्यालय फ्रेंकफर्ट में शास्त्रीय मार्क्सवाद के विवेचन की एक नवीन धारा ने जन्म लिया जिसे **फ्रैंकफर्ट स्कूल या आलोचनात्मक सिद्धांत** कहते हैं। फ्रैंकफर्ट स्कूल की स्थापना इस विश्वविद्यालय के एक धनी छात्र फैलिक्स बेल ने वित्तीय सहायता दे 1929 में की। फ्रैंकफर्ट सम्प्रदाय में मार्क्सवाद के विचारों को नई दिशाओं में विकसित किया गया है एवं उसके हिंसक और क्रांतिकारी विचारों को हटाया गया है।

नव मार्क्सवाद से सम्बंधित प्रमुख विद्वान इस प्रकार है –

थ्योडोर एडोर्नो (1903–1969)– एडोर्नो जर्मन नव मार्क्सवादी विचारक एवं फ्रैंकफर्ट सम्प्रदाय द्वारा विकसित आलोचनात्मक सिद्धांत (Critical Theory) से सम्बंधित अग्रणी विद्वान है। एडोर्नो के मुख्य रचनाएं इस प्रकार है – मैक्स हर्खाइमर के साथ लिखित डायलेक्टिक ऑफ एनलाइटमेण्ट (1944), द ऑथोरिटेरियन पर्सनिलिटी (1950), मिनिमा मॉरालिया : रिफ्लेक्शन्स फ्रॉम डेमेज्ड लाइफ (1951), नेगेटिव डायलेक्टिस (1966), इनके अलावा इन्होंने संगीत पर भी अनेक पुस्तकें लिखी है। एडोर्नो ने हर्खाइमर के साथ मिलकर **सांस्कृतिक उद्योग (Culture Industry)** का विचार दिया है जिसके अनुसार वर्तमान संस्कृति पूंजीवाद का पक्षपोषण करने के लिए सिनेमा, रेडियो, संचार माध्यमों एवं मीडिया द्वारा प्रचारित संस्कृति है जिनके मकड़जाल में फंसकर व्यक्ति अपनी मूलभूत चेतना शक्ति को भूल गया है और पूंजीवादी मिथ्या चेतना का शिकार हो गया है।[1] एडोर्नो ने

[1]होर्खाइमरऔरएडोर्नो, दकल्चरइंडस्ट्री: एनलाइटनमेंटएज़मास डसेप्शनपृष्ठ 107
[2]एडोर्नो, थयोडोरडब्ल्यू। (1990)।नकारात्मकद्वंद्वात्मकता।लंदन: रूटलेज. पी।xix.

नकारात्मक द्वन्द्ववाद (Negative Dialectics) का सिद्धांत दिया है जिसमें वह कहता है कि प्लेटो और हीगल का द्वन्द्ववाद इस धारणा पर आधारित है कि द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया में प्रत्येक द्वन्द्व के बाद सकारात्मक और पहले से उन्नत अवस्था का जन्म होता है लेकिन वास्तव में इस प्रक्रिया से पहले से नकारात्मक अवस्था आती है जो कि पूंजीवाद है।[2] एडोर्नो के विचार **सौन्दर्य शास्त्र का विरोधाभास** (Paradox ofAesthetics) कहलाते हैं क्योंकि वर्तमान में जो भी कला, साहित्य, संगीत है वे सभी पूंजीवादी व्यवस्था का बनाए रखने के आवरण मात्र है इसी आधार पर उसने वर्तमान संगीत को व्यापक आलोचना की है।

मैक्स हर्खाइमर **(1895–1973)** –हर्खाइमर भी फ्रैंकफर्ट सम्प्रदाय के आलोचनात्मक सिद्धांत के अग्रणी व्याख्याकार है। इनकी मुख्य पुस्तक – एक्लिप्स ऑफ रिजन (1947) है।

एरिक फ्रॉम (1900–1980)– फ्रॉम एक जर्मन नव मार्क्सवादी है जो यहूदी होने के कारण नाजी जमनी से भागकर अमेरिका में बस गए। इन्होंने भी फ्रैंकफर्ट स्कूल के चिन्तन में अपना योगदान दिया है। इन्होंने नव मार्क्सवाद पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से मुख्य इस प्रकार है – एस्केप फ्रॉम फ्रीडम (1941), साइको एनालिसिस एण्ड रिलिजन (1950), द आर्ट ऑफ लविंग (1956), मार्क्स कॉन्सेप्ट ऑफ मैन (1961), टू हेव आर टू बी (1976) इत्यादि। इन्होंने अपने चिन्तन में **मानव के अकेलेपन (Aloofness)** का मार्मिक चित्रण किया है। इनके अनुसार पूंजीवादी समाज से मनुष्य की सृजनात्मक प्रतिभा का विनाश हो गया है।

हर्बर्ट मार्क्यूजे (1898–1979)– फ्रैंकफर्ट सम्प्रदाय के मार्क्यूजे ने नव मार्क्सवाद के विकास में आलोचनात्मक सिद्धांत के अन्तर्गत **''एक आयामी मनुष्य की संकल्पना''** प्रस्तुत की है। इनका तर्क है कि पूंजीवादी व्यवस्था के कारण मनुष्य के बहु आयामी व्यक्तितव का विनाश हो जाता है और उपभोक्ता संस्कृति उस पर हावी हो जाती है

[3]मार्क्युज़, हर्बर्ट) 1991 (।" अध्याय1 "।एकआयामीआदमी :
उन्नतऔद्यो गकसमाजकी वचारधारामेंअध्ययन।

जिससे मनुष्य की सृजनात्मक प्रतिभा का विनाश हो जाता है और वह पूंजीवाद के मकड़जाल में फंसकर केवल उपभोक्ता मात्र बनकर रह जाता है।[3] मार्क्यूजे का विचार है कि पूंजीवाद मिथ्या चेतना को बढ़ावा देता है जो कि भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति की लालसा है। वह कहता है कि **मनुष्य सोने क पिंजरे में बन्द पंछी की तरह है जो मुक्त आकाश में उडान में आनन्द को भूल चुका है।** मार्क्यूजे की मुख्य रचनाएं – रिजन एण्ड रिवोल्यूशन : हीगल एण्ड राइज ऑफ सोशल थ्योरी (1941), इरोज एण्ड सिविलाइजेशन : ए फिलोसोफिकल इन्क्वायरी इन टू फ्रायड (1955), वन डायमेंशनल मैन : स्टडीज इन द ऑयडियोलोजी ऑफ एडवान्सड इण्डस्ट्रीज सोसाइटी (1964), ए क्रिटिक ऑफ प्योर टोलरेन्स (1965), एन ऐसे ऑन लिबरेशन (1969)। मार्क्यूजे ने **तकनीकी तर्कसंगतता (Technological Rationlity) का सिद्धांत** दिया है। इन्होंने **महान इन्कार या प्रतिषेध (ळतमंज त्मनिंस)** का विचार भी दिया है जिसके अनुसार हमें स्वतंत्र होने के लिए उपभोक्तावादी पूंजीवाद की अवधारणा को सिरे से खारिज कर उसे इन्कार करना होगा।

यूर्गेन हेबरमास (1929 से वर्तमान) – हेबरमास फ्रैंकफर्ट स्कूल के वयोवृद्ध विचारक है जिन्होंने आलोचनात्मक सिद्धांत और **तर्कसंगत संवाद** के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। इन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी है जिनमें मुख्य है – द स्ट्रक्चरल ट्रांसफोर्मेशन ऑफ द पब्लिक स्फियर (1962), नॉलेज एण्ड हयूमन इन्टरेस्ट (1971), **लेजिस्टिमेशन क्राइसिस (1975),** द थ्योरी ऑफ कम्यूनिकेटिव एक्शन (1981), द फिलोसोफिकल डिस्कोर्स ऑफ मॉर्डनिटी (1985), बिटविन फैक्ट्स एण्ड नॉर्म्सः कन्ट्रीब्यूशन टू ए डिस्कोर्स थ्योरी ऑफ लॉ एण्ड डेमोक्रेसी (992), द इन्क्लूजन ऑफ द अदर (1996), ए बर्लिन रिपब्लिक (1997) इत्यादि। इन्होंने **सम्प्रेषण या तर्कसंगत संवाद के क्षेत्र में यूनिवर्सल प्रेग्मेटिक्स (UP) मॉडल** दिया है। हेबरमास का विचार है कि परम्परागत समाज धार्मिक, नैतिक, एवं दार्शनिक तत्वों की वैधता स्वीकार करते थे लेकिन पूंजीवादी समाज ने इन तत्वों को अस्वीकार करके **''वैधता का संकट''** खड़ा कर दिया है क्योंकि पूंजीवादी समाज में

मनुष्य स्वयं सोचने समझने और निर्णय लेने वाला नहीं रहा बल्कि बनी बनाई जानकारी का प्रयोग करने वाली मशीन जैसा बन कर रह गया है।[4]

इन विद्वानों के अलावा वॉल्टर बैंजामिन, फ्रेडरिक पोलक, लियो लॉकेन्थाल, एक्सेल होनेथ, सिगफ्रिड फ्रेकाउर इत्यादि ने भी फ्रैंकफर्ट स्कूल के चिन्तन में अपना योगदान दिया है।

नव मार्क्सवाद में मूलभूत सिद्धांत और मान्यताएं –

द्वन्द्वात्मक पद्धति की पुनः व्याख्या – नव मार्क्सवाद में शास्त्रीय मार्क्सवाद की द्वन्द्वात्मक पद्धति में संशोधन किया गया है। मार्क्स का मानना था कि इतिहास में परिवर्तन का सबसे मुख्य कारण भौतिक तत्व और उनमें भी सबसे महत्वपूर्ण रूप से आर्थिक तत्व होता है। नव मार्क्सवाद ने मार्क्स की इस मान्यता में संशोधन करके यह विचार दिया है कि इतिहास में परिवर्तन का सबसे मुख्य कारण चेतना (ब्वदेबपवनेदमे) है, चेतना से ही सामाजिक विकास की दशा और दिशा निर्धारित होती है अतः **नव मार्क्सवाद हीगल द्वारा प्रतिपादित इतिहासवाद और मार्क्स द्वारा प्रतिपादित भौतिकवाद दोनों का खण्डन करता है।**

पश्चिमी सभ्यता की आलोचना– नव मार्क्सवाद में शास्त्रीय मार्क्सवाद में गलत पूंजीवाद की आलोचना के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता की आलोचना की गई है जिसे नव मार्क्सवादी **द्वन्द्वात्मक प्रबोधन** का नाम देते हैं। इस सम्बंध में एडोर्नो और हर्खाइमरने डायलेक्टिक ऑफ एनलाइटमेंट (1944) नामक पुस्तक लिखी है।

संगीत का दर्शन – नव मार्क्सवादी वर्तमान कला और संगीत को पूंजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने वाले यंत्र मानते हैं जो कि समाज में मिथ्या चेतना को बढ़ावा देते हैं। वे वर्तमान संगीत को पूंजीवादी सांस्कृतिक उद्योग को बढ़ावा देने का साधन मानते हैं। इनका मानना है कि पूंजीवादी कला, संगीत और संस्कृति समाज में व्याप्त व्यापक सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का चित्रण नहीं करते और सब कुछ अच्छा दर्शाकर आम जनता के मन में मिथ्या चेतना एवं भ्रम बनाये रखते हैं।

[4]हेबरमास, जुरगेन) 1975(।वैधतासंकट।बोस्टन :बीकनप्रेस।पी।24

मानववाद और अलगाव की संकल्पना (Humanism and Theory of Alienation)–

नव मार्क्सवाद में मार्क्स में हिंसक और क्रांतिकारी विचारों की अपेक्षा उसके मानवीय एवं अलगाव के चिन्तन पर विशेष रूप से महत्व दिया जाता है। मार्क्स का मानववादी चिन्तन उसके द्वारा लिखित **इकॉनोमिक एण्ड फिलोसोफिक मैनुस्क्रिप्ट्स ऑफ 1844** में देखने को मिलता है, इनको **पेरिस मैनुस्क्रिप्ट्स** भी कहा जाता है। इन पाण्डुलिपियों का प्रकाशन मार्क्स के मरणोपरान्त 1932 में किया गया और इनके प्रकाशन के बाद मार्क्सवादी चिन्तन में एक नवीन धारा का विकास हुआ जिसे **तरूण मार्क्स (Young Marx)** कहा जाता है। परम्परागत मार्क्सवाद मूलरूप से मार्क्स के क्रांतिकारी दर्शन से जुड़ा हुआ है जहां इतिहास की आर्थिक व्याख्या, वर्ग संघर्ष की अवधारणा, अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गय है कि केवल क्रांति के माध्यम से ही वर्गहीन–राज्यहीन समाज को प्राप्त किया जा सकता है, मार्क्स की यह अवधारणा **प्रौढ़ मार्क्स** कहलाती है इसके विपरीत तरूण मार्क्स मानववादी चिन्तन है, इसी रचना से फ्रैंकफर्ट स्कूल का विकास हुआ है जिसका आरम्भ इस स्कूल से भी पहले एंटोनियो ग्राम्शी और हंगरी के मार्क्सवादी जॉर्ज ल्यूकॉच ने कर दिया था।

मार्क्स ने अपनी कृति द इकॉनोमिक एण्ड फिलोसोफिक मैनुस्क्रिप्ट्स ऑफ 1844 में पूंजीवादी–बाजार समाज के अन्तर्गत अलगाव (Alienation) के चार स्तरों की पहचान की है[5]–

1. सर्वप्रथम मनुष्य उत्पादक और उत्पादन प्रक्रिया से कट जाता है क्योंकि पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूर से यह नहीं पूछा जाता कि किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और ये उत्पादन कैसे किया जाए ?
2. द्वितीय स्तर पर मनुष्य प्रकृति से अलग या पराया हो जाता है क्योंकि मशीनों पर काम करते–करते उसका जीवन भी मशीनी हो जाता है और वह बादल–वर्षा, सूर्योदय–सूर्यास्त जैसे प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द नहीं ले पाता।

[5]मैकलेलन, डे वड) 1980] (1970[।मार्क्सवादसेपहलेमार्क्सपृष्ठ-169-70

3. तृतीय स्तर पर मनुष्य अपने सहचरों से पराया हो जाता है। महानगरों की मेट्रो लाइफ इसका उदाहरण है, जहां मनुष्य अपने सहचरों के शादी–विवाह, तीज–त्यौहार जैसे उत्सवों में अवकाश के अभाव में भाग नहीं ले पाता।
4. अन्ततः मनुष्य अपने आपसे पराया हो जाता है। पूंजीवाद की अंद्धी दौड़ उसका साहित्य, कला और संस्कृति से अलगाव कर पूंजीवादी व्यवस्था का गुलाम बना देती है।

वस्तुओं की जड़पूजा (Fetishism of Commodities)– वस्तुओं की जड़ पूजा की अवधारणा मार्क्स के मानववादी चिन्तन का अंग है जिसका विस्तृत विवरण दास कैपिटल प्रथम खण्ड (1867) में दिया गया है। इसके अन्तर्गत मार्क्स का विश्लेषण है कि पूंजीवादी व्यवस्था में वस्तुओं का उत्पादन प्रधान और मानवीय सम्बंध गौण हो जाते हैं। इसमें मनुष्यों के सामाजिक सम्बंध उसकी चेतनशीलता से नहीं बल्कि श्रम से बाजार में उसके श्रम मूल्य से निर्धारित होता है। इस प्रकार पूंजीवादी व्यवस्था मनुष्यों के यथार्थ सामाजिक सम्बंधों पर मिथ्या सम्बंधों की परत चढ़ा देती है और वसतुओं की जड़ पूजा मिथ्या सामाजिक सम्बंधों को जन्म देती है एवं बाजार की कीमतें मानवता के मूल्य निर्धारित करती है।

स्वतंत्रता की संकल्पना– नव मार्क्सवादी में स्वतंत्रता का दर्शन **विवशता से स्वतंत्रता की ओर जाने का दर्शन** है। इस सम्बंध में फ्रेडरिक एंगेल्स की कृति एन्टी ड्यूरिंग (1878) एक उल्लेखनीय रचना है जिसे फ्रैंकफर्ट स्कूल के अनुसंधानकर्ताओं ने भी अपने शोध का मुख्य आधार बनाया है। नव मार्क्सवाद के अनुसार स्वतंत्रता का अर्थ है कि मनुष्य को अलगाव और वस्तुओं की जड़पूजा से मुक्ति मिले और मानव पूंजीवादी अवस्था में विवशता लोक से निकलकर स्वतंत्र लोक में प्रवेश करे जिसमें प्रत्येक मनुष्य का स्वतंत्र विकास समस्त मनुष्यों में स्वतंत्र विकास का आधार बन जाएगा। अलगाव से मुक्ति के लिए तरूण मार्क्स के अन्तर्गत उत्पादन के प्रमुख साधनों पर निजी स्वामित्व के बजाए सामाजिक स्वामित्व की बात की जाती है, जिसमें मनुष्य आत्मप्रेरणा से आपस में मिल–जुलकर काम करेंगे जिससे अलगाव समाप्त हो जाएगा एवं वस्तुओं की जड़पूजा भी समाप्त होगी ओर वास्तविक सामाजिक सम्बंधों की स्थापना होगी।

आत्म प्रेरित व्यवहार की संकल्पना (Concept of Prexis)

प्रेसिस या आत्म व्यवहार शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग प्राचोन यूनान में अरस्तू के विचारों में मिलता है। अरस्तू कहता है कि मनुष्य की तीन मूलभूत क्रियाएं हैं – विचारना (Thinking), निर्माण करना (Making) और प्रेसिस (अमल करना)। अरस्तू ने समस्त ज्ञान को इन तीन पर ही आधारित माना है।[6] मार्क्स ने नवीन सन्दर्भों में प्रेसिस शब्द की व्याख्या इकॉनोमिक एण्ड फिलोसोफिक मैनुस्क्रिप्ट्स ऑफ 1844 एवं थिसिस ऑन फायरबाख (1845) में की है। मार्क्स के अनुसार आत्म प्रेरित व्यवहार या प्रेसिस का अर्थ है कि इसके द्वारा मानव अपना स्वतंत्र, सार्वभौमिक, रचनात्मक आत्मविकास करे। इस प्रकार नव मार्क्सवाद के अन्तर्गत आत्म प्रेरित व्यवहार की संकल्पना स्वतंत्रता के विचार के साथ निकट रूप से जुड़ी हुई है। इसमें मानव प्रकृति में विश्लेषण में मार्क्स ने स्वार्थ को उसका मूल प्रेरक न मानते हुए व्यक्तिवाद का खण्डन किया है और सामाजिकता को मान्यता दते हुए समाजवाद की पुष्टि की है। संक्षेप में **आत्म प्रेरित व्यवहार वह स्थिति है जिसमें मनुष्य पूंजीपति की इच्छा से नहीं बल्कि आत्म प्रेरणा से उत्पादन प्रक्रिया में हिस्सा लेता है।** आत्म प्रेरित व्यवहार की अवधारणा में निम्न परिस्थितियां सहायक हैं –

- प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार काम मिले।
- स्त्री और पुरूष को समान कार्य के लिए समान वेतन मिले।
- कार्य के घण्टे निर्धारित हो।
- अवकाश और मनोरंजन की व्यवस्था हो।
- बेकारी, बीमारी, बुढ़ापा और अपंगता की स्थिति में मनुष्य को पूंजीवाद के अनुसार मर–खपने के लिए छोड़ न दिया जाए बल्कि उसकी सामाजिक सहायता की व्यवस्था हो।

मार्क्स के इसी सिद्धांत से **अस्तित्ववाद और संरचनावाद** का जन्म होता है जिसका नवीन मार्क्सवाद में गहन अध्ययन किया गया है।

[6]स्मिथ, एमके) 1999, 2011)।'व्यावहारिकक्याहै?' अनौपचारिक शक्षाके वश्वकोशमें।

ज्यां पॉल सार्त्रद्वारा विकसित अस्तित्ववाद (Existentialism**)**–सार्त्र (1905–1980) बीसवीं सदी के अग्रणी फ्रेंच नाटककार, उपन्यासकार और मार्क्सवादी दार्शनिक है जिनका नाम अस्तित्ववाद के उन्नायकों में प्रमुख है। **सार्त्र प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका सिमोन द बोउआर के साथ खुले सम्बंधों में रहे** और सार्त्र को 1964 का नोबेल साहित्य पुरस्कार मिला है। इनकी प्रसिद्ध रचनाएं बिइंग एण्ड नथिंगनेस (1943) और एक्जिजटेलिज्म इज ए ह्यूमनिज्म (1946) है। अस्तित्ववाद मानव केन्द्रित दृष्टिकोण है, इसके अनुसार मानव का महत्व उसकी आत्मनिष्ठता में है न कि उसकी वस्तुनिष्ठता में। पूंजीवाद, विज्ञान, तकनीकी और बुद्धिवाद के विकास ने मानव को एक वस्तु बना दिया है जबकि मानव की पहचान उसके व्यक्तित्व या अस्तित्व के आधार पर होनी चाहिए।[7]सार्त्र कहता है कि अगर ईश्वर का अस्तित्व होता तो वह मनुष्य को अपनी योजना अनुसार बनाता पर ऐसा नहीं हुआ है अतः **ईश्वर मर चुका है या है ही नहीं** और मनुष्य स्वतंत्र है इस प्रकार वह **नीत्शे द्वारा प्रतिपादित अनीश्वरवादी या ईश्वर मर चुका है** कि अवधारणा को आगे बढ़ाता है।

[7]सोलोमन, रॉबर्टसी) .1974 .(अस्तित्ववाद।मैकग्रा-हिल।पी।1 -2।